भारतीय संगीत में नवीन तकनीक की उपयोगिता

Dr. Shruti Hora
Assistant Professor, P.G.G.C.G., Sector-11, Chandigarh

20वीं शताब्दी वह शताब्दी है जिसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनगिणत परिवर्तन हुए है। इन के प्रभाव से जीवन का प्रत्येक क्षेत्र जहाँ परिवर्तित एवं प्रभावित हुआ है वही हमारी कला व संस्कृति भी इससे अछूती नही रही। शनै–शनैं संगीत पर भी इस का प्रभाव पड़ा है। बीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में संगीत कला में तकनीकी वैज्ञानिकता द्वारा रिकार्डिंग पद्धति, शिक्षण पद्धति व अभ्यास पद्धति में परिवर्तन हुए जिससे संगीत के प्रचार व प्रसार के अनेक माध्यम सुलभ हुए, मानो कला के क्षेत्र में लहर दौड़ पड़ी है।

संगीत एक अध्यात्मिक कला है, जो न केवल स्वतः के अपितु दूसरे के हृदय को भी अहलादित करने की क्षमता रखती है। आज जैसे–जैसे विकास की गति में तीव्रता आई है विज्ञान ही नहीं बल्कि कला के क्षेत्र में भी निखार आया है, व प्रसार तथा विविधता बढ़ती जा रही है। संगीत कला के क्षेत्र में पहले कलाकारों की कला का प्रदर्शन संकीर्ण क्षेत्र तक सिमित रहता था, परन्तु आज यह प्रदर्शन व संवर्धन व्यापक हो गया है। संगीत दो शाखाओं में विभाजित है – दृश्य व श्रव्य। श्रव्य कला में गायन वादन व दृश्य रूप में नृत्य कला अभिनय आदि आते हैं।

वी.सी.आर, रिकार्ड प्लेयर, रेडियों, टेपरिर्काडर के अविष्कार व आकाशवाणी के सहयोग से संगीत, गायन, वादन, सुनने व स्वतः के प्रयोग देने से कलाकारों की अभिव्यक्ति व सीखने वालों की इच्छा की तृप्ति हो रही है, वही दूरदर्शन के द्वारा नृत्य कला की भावमंगिमाओं को देखने का सुअवसर जन–साधारण को प्राप्त हो रहा है। आज हम अपनी तकनीक के कारण पुराने गीत व रचनाओं को हम सुन पा रहे हैं। आज हम दूरदर्शन के कारण कोसों दूर बैठे संगीत के गायन, वादन व नृत्य को देख व सुन सकते हैं। शास्त्रीय संगीत को क्षेत्र में विश्व विख्यात कलाकारों, पं. रविशंकर, पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, पं. बिरजू महाराज, श्रीमति गिरिजा देवी, पं. अमज़द अली खान, श्रीमति एम. राजन आदि के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति तक पहुँचाने का श्रेय तकनीकी के बढ़ते स्वरूप को ही प्रदान किया जाता है।

नई तकनीकी के अन्तर्गत सूचना तकनीकी अर्थात इंटरनैट के द्वारा संगीत कला के शास्त्रीय एवं क्रियात्मक पक्ष को विश्व के किसी भी स्थान पर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान समय में संगीत शिक्षण को सुगम और विश्वव्यापी बनाने में इन्टरनैट द्वारा प्राप्त सेवाओं में ई–मेल, आन लाईन चैटिंग, वीडियो कान्फ्रैंसिंग आदि सहायक हैं, जिनके प्रयोग से दूरस्थ शिक्षा को भी व्यापक तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

विज्ञान की बहुमुखी उपलब्धियों में कम्पयूटर का भी विशेष स्थान है। Courtney David R. के अनुसार, "India is already making significant use of electronics in the process of music education. Generation of drones and rhythms are a common place, with experimental efforts at lahara (repetitive melodies) data basis.

Computer assisted composition and computer assisted education cannot be for off."

आज के युग में जीवन के हर क्षेत्र में तकनीकी की पहुँच है। खान–पान, रहन–सहन, देश–विदेश की वार्तालाप और यहाँ तक गीत, संगीत सभी स्थानों पर टैक्नीकल उपकरणों का योगदान है। इलैक्ट्रानिक तानपुरा, इलैक्ट्रानिक तालपेटी सभी कुछ तकनीकों की ही देन है। इलैक्ट्रानिक तानपुरा आठ–नौ इंच का एक छोटा सा बाक्स होता है। जिसमें तानपुर के चार ध्वनियों के निकास के लिए बटन होते है। बटन से स्वरों को ट्यून करके, प्लग लगाने पर यह तानपूरा स्वर देने लगता है। इस पर बड़ी आसानी से रियाज किया जा सकता है। इसी तरह इलैक्ट्रानिक तालपेटी में कई तालों के ठेके होते हैं। तालपेटी ताल देने का काम बिना तबला वादक के बखूबी करती है। आज का व्यस्त समय में समय की बचन के साथ–साथ तबला मिलाने का झंझट नहीं रहता, दूसरे कहीं ले जाने में टूटने–फूटने का भय भी नहीं रहता, तीसरे किसी अन्य की आवश्यकता भी नहीं रहती। तकनीकी के कारण प्लग लगाइये और बटन दबाइये। आप को सुर व ताल का ठेका मिल जाएगा।

विज्ञान की प्रगति के कारण रेडियों, टी.वी., सी.डी. प्लेयर, कम्पयूटर, प्रोजेक्टर आदि पर आसानी से अपने मन पसन्द गुरू का सानिध्य पा सकते हैं और घर बैठे–बैठे ही संगीत की साधना कर सकते हैं। इन साधनों का उपयोग करके संगीत को रूचिपूर्ण बना सकते हैं। संगीत में माईकटैक्नीक, साईड इफैक्ट में विज्ञान ने बहुत उन्नति कर ली है। इस तरह शिक्षण तकनीक द्वारा एक साथ अधिक से अधिक विद्यार्थियों को सिखाया जा सकता है। वैज्ञानिक इलैक्ट्रानिक और संचार माध्यमों के कारण संगीत कला का सर्वाधिक विकास प्रचार और प्रसार हुआ है।

संगीत कला को रिकार्ड करने का प्रथम प्रयास सिलिन्डर फोनोग्राफ तथा ग्रामोफोन के अविष्कार के रूप में हुआ, धीरे–धीरे आज की टेपिंग को परिणाम सामने आने लगे। घरानेदार गायकों की गायकी और वन्दिशों को इन उपकरणों ने सुरक्षित किया। रिकार्ड प्लेयर, टेप, कम्पयूटर, स्टीरियों और म्यूजिक सिस्टम की मदद से विद्यार्थी स्वयं का संगीत सुनकर उसकी कमियों को निकाल सकता है। सिन्थेसाइजर जैसे इलैक्ट्रोनिक इन्सट्रूमैंट में अलग–अलग प्रकार के वाद्य यन्त्रों को एक ही बोर्ड पर सम्भव बनाकर चमत्कार ही कर दिया है। फिल्म संगीत में इस बोर्ड (सिन्थेसाइजर) का सर्वाधिक महत्व है। जहाँ टैलीविजन ने मनोरंजन एवं संगीत के क्षेत्र में क्रांन्तिकारी विकास किया है वहाँ संगीत के लिए टैक्नोलोजी की सब से बड़ी देन माइक्रोफोन है। इस उपकरण ने संगीत की अन्दरूनी दुनिया को ही बदल दिया है। जो संगीत पहले कुछ ही श्रोताओं के बीच सीमित था, अब माइक्रोफोन के माध्यम से श्रोताओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। श्रोताओं को संगीत की शास्त्रीयता का ज्ञान न होते हुए भी इस उपकरण से संगीत के सुरों की मधुरता और भाव–पक्ष का आनन्द उपलब्ध होता है। इंटरनैट उपकरण प्रत्येक सूचना का एक तेज माध्यम है। संगीत से संबंधित पुस्तकें, गायकों–वादकों का पता–ठिकाना तथा संगीत की पुरानी और नई सूचनाएं सभी की जानकारी इंटरनैट एक मिनट में दे देता है। संगीत–शिक्षण को विश्वव्यापी बनाने तथा अन्य विषयों की तरह संगीत का दूर तक फैलाव करने में इन्टरनैट की सेवाएं अद्भुत है, जिसके अन्तर्गत ई–मेल, ऑनलाइन, इन्फोरमेशन, वीडियों, कान्फ्रेंसिंग आदि आती है। अतः संगीत शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी का योगदान सराहनीय है।